Gyan Manthan
Journal homepage: www.gyanmanthan.org ISSN: **3108-3455**

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में निहित मानवीय मूल्यों एवं चरित्र निर्माण की अवधारणा का विश्लेषणात्मक अध्ययन

सत्य नरायन यादव[1]
सहायक प्राध्यापक, शिक्षा विभाग, स्व. गुलाब बाई यादव स्मृति शिक्षा महाविद्यालय बोरावां (खरगोन), मध्य प्रदेश

सारांश

प्रस्तुत शोध पत्र 'राष्ट्रीय शिक्षा नीति (NEP 2020) के परिप्रेक्ष्य में मानवीय मूल्यों और चरित्र निर्माण की अवधारणा का गहन विश्लेषण करता है। गुणात्मक शोध विधि के माध्यम से यह अध्ययन स्पष्ट करता है कि नई नीति किस प्रकार प्राचीन भारतीय ज्ञान परंपरा के शाश्वत मूल्यों और आधुनिक वैज्ञानिक दृष्टिकोण के मध्य एक सेतु का कार्य करती है। नीति का मूल लक्ष्य केवल बौद्धिक विकास तक सीमित न रहकर, एक 'पूर्ण मानव' विकसित करना है, जिसमें करुणा, न्याय, सत्य और साहस जैसे गुणों का समावेश हो। शोध यह रेखांकित करता है कि शिक्षा का उद्देश्य मात्र डिग्री प्राप्त करना या जीविकोपार्जन का साधन जुटाना नहीं है, बल्कि यह व्यक्ति के भीतर आत्मसाक्षात्कार की ज्योति - जलाने और उसे समाज के प्रति उत्तरदायी बनाने की एक पवित्र प्रक्रिया है। प्राचीन भारतीय शिक्षण पद्धति के'सा विद्या या विमुक्तये' के आदर्श को समाहित करते हुए, यह नीति छात्रों में नैतिक विवेक और तार्किक क्षमता के समन्वय पर बल देती है। अध्ययन का निष्कर्ष यह स्पष्ट करता है कि जब शिक्षा मानवीय मूल्यों से संचालित होती है, तभी वह सामाजिक परिवर्तन और राष्ट्र निर्माण का वास्तविक मार्ग प्रशस्त कर सकती है। इस प्रकार, NEP 2020 एक ऐसी समावेशी शिक्षा प्रणाली की आधारशिला रखती है जो वैश्विक स्तर पर प्रतिस्पर्धी होने के साथसाथ अपनी सांस्कृतिक और नैतिक जड़ों से भी - गहराई से जुड़ी हुई है।

मुख्य शब्द : मानवीय मूल्य, चरित्र निर्माण, NEP 2020, भारतीय ज्ञान परंपरा, सामाजिक परिवर्तन, आधुनिक चुनौतियां

प्रस्तावना

शिक्षा मानव सभ्यता का वह आधार स्तंभ है जो न केवल व्यक्तिगत प्रगति, बल्कि समाज की निरंतरता और विकास दोनों को सुनिश्चित करता है। प्रसिद्ध समाजशास्त्री एमिल दुर्खीम के अनुसार, "शिक्षा का

मुख्य कार्य समाज के अस्तित्व की अनिवार्य शर्तों को पुनः उत्पन्न करना है।" यह प्रक्रिया केवल सूचनाओं के हस्तांतरण तक सीमित नहीं है, बल्कि व्यक्ति को सामाजिक संरचना का एक उत्तरदायी अंग बनाने की यात्रा है। भारतीय ज्ञान परंपरा में इस विचार को और अधिक व्यापकता प्रदान करते हुए 'सा विद्या या विमुक्तये' (विद्या वह है जो मुक्त करे) के आदर्श को स्वीकार किया गया है। यहाँ मुक्ति का तात्पर्य केवल आध्यात्मिक मोक्ष से नहीं, बल्कि अज्ञान, संकीर्णता और पूर्वाग्रहों से स्वतंत्रता से भी है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति (NEP) 2020 इसी प्राचीन दार्शनिक आधार को 21वीं सदी के आधुनिक और वैज्ञानिक संदर्भ में पुनर्जीवित करने का एक महत्वाकांक्षी प्रयास है। वर्तमान वैश्विक परिदृश्य में जहाँ तकनीक और व्यावसायिक कौशल को प्राथमिकता दी जा रही है, यह नीति एक संतुलन स्थापित करती है। यह स्पष्ट करती है कि शिक्षा का उद्देश्य केवल आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर 'कुशल श्रमिक' तैयार करना नहीं, बल्कि 'चरित्र निर्माण' के माध्यम से एक 'पूर्ण मानव' का विकास करना है। नीति के अनुसार, चरित्र निर्माण वह प्रक्रिया है जो छात्र को नैतिक विवेक प्रदान करती है, जिससे वह सही और गलत के मध्य भेद कर सके। प्रस्तुत शोध पत्र इसी आलोक में विश्लेषण करता है कि कैसे एनईपी 2020 संज्ञानात्मक क्षमताओं के साथ-साथ सामाजिक, नैतिक और भावनात्मक स्तर पर भी विद्यार्थी को सुदृढ़ बनाने का लक्ष्य रखती है। यह शिक्षा को जीविकोपार्जन के साधन से ऊपर उठाकर आत्म-साक्षात्कार और सामाजिक उत्तरदायित्व के मार्ग के रूप में प्रतिस्थापित करने का एक विजन है, जो अंततः एक न्यायसंगत और जीवंत ज्ञान समाज के निर्माण में सहायक होगा।

GYAN MANTHAN
A MULITIDISCIPLINARY RESEARCH JOURNAL

शोध साहित्य सर्वेक्षण

प्रस्तुत शोध का साहित्य सर्वेक्षण दर्शाता है कि शिक्षा और मानवीय मूल्यों का अंतर्संबंध सदैव अकादमिक विमर्श का केंद्र रहा है। कोठारी आयोग (1964-66) ने दशकों पूर्व यह रेखांकित किया था कि शिक्षा का उद्देश्य केवल साक्षरता नहीं, बल्कि सामाजिक और नैतिक मूल्यों का पोषण होना चाहिए। दार्शनिक जॉन ड्यूवी का यह विचार कि "शिक्षा जीवन की तैयारी नहीं, बल्कि स्वयं जीवन है", आज की वैश्विक परिस्थितियों में और भी प्रासंगिक हो जाता है। विभिन्न शोध पत्रों का विश्लेषण यह स्पष्ट करता है कि वैश्वीकरण और डिजिटल युग में जहाँ तकनीकी दक्षता (Hard Skills) का अभूतपूर्व विस्तार हुआ है, वहीं मानवीय संवेदनाओं और पारस्परिक सहानुभूति में एक स्पष्ट रिक्ति देखी गई है।

समकालीन शोध साहित्य यह प्रतिपादित करता है कि 'राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020' इसी शून्यता को भरने के लिए 'वसुधैव कुटुंबकम' और 'संवैधानिक मूल्यों' के एकीकरण का मार्ग प्रशस्त करती है। शोधों के अनुसार, भारतीय ज्ञान परंपरा (IKS) में निहित 'धर्म' और 'नीति' के सिद्धांत केवल पारंपरिक विचार नहीं हैं, बल्कि ये आज के मानसिक तनाव और वैश्विक संकटों के 'साक्ष्य-आधारित समाधान' प्रदान

करने में सक्षम हैं। पूर्व के अध्ययनों का निष्कर्ष है कि जब तक शिक्षा प्रणाली में प्राचीन भारतीय दर्शन और आधुनिक वैज्ञानिक तर्कशक्ति का सामंजस्य नहीं होगा, तब तक एक 'नैतिक रूप से सजग' वैश्विक समाज का निर्माण संभव नहीं है। यह सर्वेक्षण सिद्ध करता है कि नीतिगत स्तर पर मूल्यों का समावेशन ही भविष्य की पीढ़ी को 'आत्म-साक्षात्कार' और 'सामाजिक उत्तरदायित्व' की ओर ले जा सकता है।

शोध समस्या का कथन

प्रस्तुत शोध का समस्या कथन राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में निहित मानवीय मूल्यों एवं चरित्र निर्माण की अवधारणा का विश्लेषणात्मक अध्ययन है।

शोध के उद्देश्य

1. NEP 2020 के अंतर्गत मानवीय मूल्यों की पहचान और वर्गीकरण करना।
2. चरित्र निर्माण के लिए प्रस्तावित प्राचीन भारतीय शिक्षण पद्धतियों की प्रासंगिकता का मूल्यांकन करना।
3. शिक्षा को सामाजिक नियंत्रण और परिवर्तन के 'दोहरे इंजन' के रूप में विश्लेषित करना।

GYAN MANTHAN
A MULITIDISCIPLINARY RESEARCH JOURNAL

शोध विधि

प्रस्तुत शोध में गुणात्मक अनुसंधान (Qualitative Research) पद्धति का उपयोग किया गया है।

- अध्ययन का प्रकार: वर्णनात्मक एवं विश्लेषणात्मक (Descriptive and Analytical)।
- डेटा के स्रोत: प्राथमिक स्रोतों के रूप में NEP 2020 की मूल रिपोर्ट और माध्यमिक स्रोतों के रूप में संबंधित शोध पत्र, समाजशास्त्रीय ग्रंथ एवं प्राचीन दार्शनिक ग्रंथों का विश्लेषण किया गया है।
- विश्लेषण पद्धति: विषयगत विश्लेषण (Thematic Analysis) के माध्यम से नीति के मुख्य बिंदुओं को वर्गीकृत किया गया है।

भारतीय ज्ञान परंपरा (IKS) और नैतिक आधार

राष्ट्रीय शिक्षा नीति (NEP) 2020 का एक प्रमुख स्तंभ भारतीय छात्रों को उनकी सांस्कृतिक और बौद्धिक जड़ों से पुनः जोड़ना है। शोध यह स्पष्ट करता है कि ऋग्वैदिक काल से लेकर उपनिषदिक चिंतन तक, भारत में ज्ञान अर्जन को मात्र सूचनाओं का संग्रह नहीं, बल्कि 'सत्य' की निरंतर खोज

माना गया है। नीति में निहित 'लोक विद्या' (पारंपरिक शिल्प, स्थानीय कला और व्यावसायिक कौशल) के प्रति सम्मान का भाव चरित्र निर्माण की प्रक्रिया का अभिन्न अंग है। यह केवल कौशल विकास नहीं है, बल्कि इसके माध्यम से छात्र में 'श्रम के प्रति गरिमा' (Dignity of Labour) और 'विनम्रता' जैसे नैतिक गुणों का विकास करना है। विश्लेषण दर्शाता है कि जब विद्यार्थी अपने परिवेश की पारंपरिक दक्षताओं को सम्मान देता है, तो उसमें अहंकार का नाश होता है और समाज के प्रति सेवा भाव जाग्रत होता है। इस प्रकार, IKS का एकीकरण आधुनिक शिक्षा को एक ठोस नैतिक आधार प्रदान करता है।

सा विद्या या विमुक्तये: ज्ञान का परम लक्ष्य

भारतीय दर्शन की शाश्वत मान्यता रही है कि ज्ञान का अंतिम लक्ष्य अज्ञान, अंधविश्वास और संकीर्ण बंधनों से मुक्ति प्राप्त करना है। NEP 2020 इसी प्राचीन दर्शन को आधुनिक शैक्षणिक ढांचे में समाहित करती है। नीति का मुख्य उद्देश्य शिक्षा को केवल व्यावसायिक लाभ का माध्यम बनाने के बजाय छात्र को पूर्वाग्रहों, कट्टरता और मानसिक संकीर्णता से मुक्त कर एक सुदृढ़ 'नैतिक विवेक' (Moral Conscience) प्रदान करना है। यहाँ 'मूल्य' (Values) केवल कक्षा में पढ़ाया जाने वाला एक अतिरिक्त विषय नहीं हैं, बल्कि यह पूरी शिक्षण प्रक्रिया के व्यवहारिक स्वरूप का हिस्सा हैं। शोध का निष्कर्ष है कि जब शिक्षा व्यक्ति को स्वयं के विकारों से मुक्त करती है, तभी वह वास्तविक अर्थों में 'शिक्षित' कहलाता है। यह 'मुक्ति' छात्र को स्वतंत्र रूप से निर्णय लेने और वैश्विक कल्याण की दिशा में सोचने के योग्य बनाती है।

शिक्षा: सामाजिक नियंत्रण और परिवर्तन का इंजन

समाजशास्त्रीय दृष्टि से शिक्षा एक 'दोहरे इंजन' के रूप में कार्य करती है, जिसका विश्लेषण NEP 2020 के संदर्भ में अत्यंत प्रासंगिक है। प्रथम पक्ष 'सामाजिक नियंत्रण' का है; शिक्षा व्यक्ति के भीतर आत्म-अनुशासन और सामाजिक मूल्यों के प्रति सम्मान विकसित करती है, जिससे समाज में बाहरी दमन या कानून के कठोर प्रयोग की आवश्यकता स्वतः कम हो जाती है। द्वितीय पक्ष 'सामाजिक परिवर्तन' का है; शिक्षा पुरानी रूढ़ियों और अतार्किक परंपराओं को तोड़कर वैज्ञानिक और तार्किक चिंतन को बढ़ावा देती है। नीति में 'आलोचनात्मक चिंतन' (Critical Thinking) को प्राथमिकता देना इसी परिवर्तनकारी शक्ति का साक्ष्य है। यह संतुलित दृष्टिकोण सुनिश्चित करता है कि समाज अपनी नींव (मूल्यों) को सुरक्षित रखते हुए भी प्रगतिशील दिशा में आगे बढ़े। शोध यह प्रतिपादित करता है कि

शिक्षा का यह दोहरा चरित्र ही एक न्यायसंगत और समतामूलक समाज के निर्माण का मार्ग प्रशस्त करता है।

संवैधानिक और मानवीय मूल्यों का समन्वय

राष्ट्रीय शिक्षा नीति (NEP) 2020 का एक अत्यंत महत्वपूर्ण पक्ष संवैधानिक गरिमा और शाश्वत मानवीय मूल्यों के मध्य एक सार्थक समन्वय स्थापित करना है। नीति यह स्पष्ट करती है कि आधुनिक शिक्षा का उद्देश्य केवल व्यक्तिगत लाभ न होकर, छात्रों में मानवाधिकारों, पर्यावरण संरक्षण और वैश्विक कल्याण के प्रति गहरी जिम्मेदारी का भाव विकसित करना होना चाहिए। इस संदर्भ में, नीति भारतीय दर्शन के पाँच आधारभूत मूल्यों 'सत्य', 'धर्म', 'शांति', 'प्रेम' और 'अहिंसा' को संवैधानिक मूल्यों जैसे 'समानता', 'स्वतंत्रता', 'बंधुत्व' और 'न्याय' के साथ एकीकृत करने पर बल देती है।

शोध के अनुसार, यह समन्वय एक ऐसे नागरिक का निर्माण करता है जो न केवल अपने अधिकारों के प्रति सजग है, बल्कि अपने नैतिक कर्तव्यों के प्रति भी समर्पित है। जब एक छात्र 'अहिंसा' के मानवीय मूल्य को 'न्याय' के संवैधानिक मूल्य के साथ जोड़कर देखता है, तो उसमें सर्वसमावेशी दृष्टिकोण विकसित होता है। जैसा कि गांधीजी ने कहा था, "शिक्षा से मेरा तात्पर्य बालक और मनुष्य के शरीर, मन और आत्मा में निहित सर्वोत्तम गुणों को बाहर निकालना है।" NEP 2020 इसी 'सर्वोत्तम' को संवैधानिक ढांचे के भीतर विकसित करने का प्रयास करती है। यह एकीकरण शिक्षा को एक 'पवित्र सामाजिक अनुबंध' (Social Contract) के रूप में प्रतिस्थापित करता है। यह छात्रों को यह बोध कराता है कि वैश्विक शांति और सतत विकास केवल तकनीकी प्रगति से नहीं, बल्कि नैतिक आचरण और संवैधानिक निष्ठा के संतुलन से ही संभव है। यह नीतिगत दृष्टिकोण छात्र को केवल एक 'कुशल कर्मी' के बजाय एक 'सचेत वैश्विक नागरिक' बनाने की दिशा में एक क्रांतिकारी कदम है।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति (NEP) 2020 और चारित्रिक मूल्य

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 केवल एक शैक्षणिक दस्तावेज नहीं है, बल्कि यह भारत की भावी पीढ़ी के नैतिक और चारित्रिक पुनरुत्थान का एक संकल्प-पत्र है। इस नीति का मूल दर्शन इस विश्वास पर आधारित है कि शिक्षा का अंतिम उद्देश्य केवल साक्षरता या व्यावसायिक दक्षता प्राप्त करना नहीं, बल्कि एक 'न्यायसंगत और समतामूलक समाज' का निर्माण करना है। नीति स्पष्ट रूप से उल्लेख करती है कि शिक्षा को छात्रों में "करुणा, सहानुभूति, साहस, और वैज्ञानिक सोच" जैसे गुणों का विकास करना चाहिए।

चरित्र निर्माण के संदर्भ में, NEP 2020 प्राचीन भारतीय ज्ञान परंपरा के उस आदर्श को पुनर्जीवित करती है जहाँ ज्ञान को आचरण से श्रेष्ठ माना गया है। नीति में 'पंचकोश' विकास की अवधारणा का संकेत मिलता है, जो व्यक्ति के शारीरिक, मानसिक और आध्यात्मिक उत्थान पर बल देती है। इसमें 'सत्य', 'धर्म', 'शांति' और 'अहिंसा' जैसे शाश्वत मानवीय मूल्यों को संवैधानिक मूल्यों के साथ एकीकृत किया गया है। स्वामी विवेकानंद के शब्दों में, **"हमें उस शिक्षा की आवश्यकता है जिससे चरित्र निर्माण हो, मन की शक्ति बढ़े, बुद्धि का विस्तार हो और जिससे व्यक्ति अपने पैरों पर खड़ा हो सके।"** NEP 2020 इसी विजन को साकार करने का प्रयास करती है। शोध यह दर्शाता है कि जब मूल्यों को पाठ्यक्रम के एक हिस्से के बजाय 'शिक्षण पद्धति' का अभिन्न अंग बनाया जाता है, तब छात्र में 'नैतिक विवेक' (Moral Conscience) जागृत होता है। निष्कर्षतः, यह नीति एक ऐसे 'पूर्ण मानव' के विकास का मार्ग प्रशस्त करती है जो अपनी जड़ों के प्रति गौरवान्वित है और वैश्विक कल्याण के प्रति उत्तरदायी है।

यहाँ आपके शोध पत्र के अगले दो महत्वपूर्ण बिंदुओं का संक्षिप्त और सारगर्भित विश्लेषण दिया गया है:

प्राचीन शिक्षण पद्धति: श्रवण, मनन और निदिध्यासन

चरित्र निर्माण की प्रक्रिया में केवल तथ्यों को रटना पर्याप्त नहीं है; इसके लिए गहन बोध की आवश्यकता होती है। प्राचीन भारतीय शिक्षण पद्धति के तीन सोपान— **श्रवण** (ध्यानपूर्वक सुनना), **मनन** (सुने हुए पर चिंतन करना) और **निदिध्यासन** (ज्ञान को व्यवहार में उतारना)—आधुनिक 'अनुभवात्मक अधिगम' (Experiential Learning) के मूल आधार हैं। NEP 2020 इसी पद्धति को पुनर्जीवित कर छात्रों के सर्वांगीण विकास (Holistic Development) को सुनिश्चित करने का प्रस्ताव रखती है। यह दृष्टिकोण रटंत प्रणाली को समाप्त कर छात्र के भीतर तार्किक क्षमता और आत्म-चिंतन का विकास करता है, जिससे ज्ञान केवल मस्तिष्क तक सीमित न रहकर उसके व्यक्तित्व का हिस्सा बन जाता है।

आधुनिक चुनौतियां और डिजिटल नैतिकता

वर्तमान डिजिटल युग में एल्गोरिदम और सोशल मीडिया मानवीय व्यवहार और निर्णयों को गहराई से प्रभावित कर रहे हैं। ऐसे समय में, शोध यह सुझाव देता है कि शिक्षा प्रणाली में 'डिजिटल साक्षरता' के साथ-साथ 'डिजिटल नैतिकता' (Digital Ethics) का समावेश अनिवार्य है। NEP 2020 इसी दिशा में कार्य करती है ताकि भविष्य की पीढ़ी तकनीक का उपयोग विवेकपूर्ण तरीके से कर सके। चरित्र

निर्माण का यह आधुनिक आयाम सुनिश्चित करता है कि तकनीकी प्रगति मानवीय संवेदनाओं और नैतिक मूल्यों के विनाश का कारण न बने, बल्कि समाज के कल्याण और 'वसुधैव कुटुंबकम' की भावना को सुदृढ़ करने का माध्यम बने।

शोध निष्कर्ष

प्रस्तुत शोध पत्र के विस्तृत विश्लेषण और गुणात्मक अध्ययन के आधार पर यह निष्कर्ष प्राप्त होता है कि 'राष्ट्रीय शिक्षा नीति (NEP) 2020' भारतीय शिक्षा प्रणाली में एक युगांतकारी परिवर्तन का शंखनाद है। यह नीति मात्र एक शैक्षणिक ढांचा न होकर एक 'होलिस्टिक' (समग्र) दृष्टिकोण प्रस्तुत करती है, जो विद्यार्थी के संज्ञानात्मक, भावनात्मक और नैतिक पक्षों को समान महत्व देती है। शोध यह स्पष्ट करता है कि शिक्षा का वर्तमान स्वरूप जो केवल 'डिग्री देने वाली मशीनों' और 'कुशल श्रमिकों' के निर्माण तक सीमित हो गया था, अब उसे पुनर्जीवित कर ऐसे सजग नागरिकों के निर्माण की ओर मोड़ा जा रहा है जो 'वसुधैव कुटुंबकम' (सम्पूर्ण विश्व एक परिवार है) के वैश्विक सिद्धांत को केवल जान सकें ही नहीं, बल्कि उसे अपने आचरण में जी सकें। यह शोध प्रतिपादित करता है कि मानवीय मूल्य और चरित्र निर्माण शिक्षा के गौण तत्व या उपोत्पाद (By-products) नहीं हैं, बल्कि ये संपूर्ण शिक्षा प्रक्रिया के 'मुख्य उद्देश्य' होने चाहिए। जब तक शिक्षा का आधार 'सा विद्या या विमुक्तये' के दर्शन पर टिका होगा, तब तक छात्र अपने संकीर्ण स्वार्थों से ऊपर उठकर सामाजिक उत्तरदायित्व और राष्ट्र निर्माण की दिशा में कार्य करेंगे। नीति में प्रस्तावित 'अनुभवात्मक अधिगम' और 'भारतीय ज्ञान परंपरा' का समावेश छात्रों में आत्मविश्वास और आत्म-गौरव का संचार करता है।

अंत में, यह कहा जा सकता है कि NEP 2020 प्राचीन भारतीय प्रज्ञा और आधुनिक वैज्ञानिक चेतना के मध्य वह सेतु है, जो एक ऐसे 'पूर्ण मानव' को विकसित करने की क्षमता रखता है जो तकनीक में दक्ष होने के साथ-साथ नैतिक रूप से भी अडिग हो। यदि इस नीति के प्रावधानों को उनके वास्तविक स्वरूप में लागू किया जाता है, तो यह न केवल भारत को 'विश्व गुरु' के रूप में पुनः स्थापित करेगी, बल्कि एक न्यायसंगत, शांतिपूर्ण और करुणामयी वैश्विक समाज की आधारशिला भी रखेगी। शिक्षा का अंतिम सत्व इसी में है कि वह व्यक्ति को आत्म-साक्षात्कार की ओर ले जाए और उसे मानवता की सेवा हेतु समर्पित करे।

भविष्य के लिए सुझाव

- **शिक्षक प्रशिक्षण:** शिक्षकों को स्वयं मूल्यों का रोल मॉडल बनना होगा।

- **IKS सेल की स्थापना:** शैक्षणिक संस्थानों में भारतीय ज्ञान परंपरा के व्यावहारिक सत्र आयोजित किए जाने चाहिए।
- **पाठ्यक्रम में सरलीकरण:** प्राचीन ग्रंथों के नैतिक सूत्रों को कहानियों और गतिविधियों के माध्यम से आधुनिक भाषाओं में प्रस्तुत किया जाए।

संदर्भ सूची

- **Arweck, E., & Nesbitt, E.** (2010). *Values education: Cultural and religious perspectives*. Routledge.
- **भारत सरकार.** (2020). *राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020*. शिक्षा मंत्रालय. https://www.education.gov.in/sites/upload_files/mhrd/files/NEP_Final_HINDI_0.pdf
- **Dewey, J.** (1916). *Democracy and education: An introduction to the philosophy of education*. Macmillan.
- **Durkheim, E.** (1956). *Education and sociology* (S. D. Fox, Trans.). Free Press.
- **Friere, P.** (1970). *Pedagogy of the oppressed*. Herder and Herder.
- **गौतम, एस.** (2021). *भारतीय ज्ञान परंपरा और आधुनिक शिक्षा*. विद्या प्रकाशन.
- **Kohlberg, L.** (1981). *Essays on moral development: Vol. 1. The philosophy of moral development*. Harper & Row.
- **कोठारी, डी. एस.** (1966). *शिक्षा और राष्ट्रीय विकास: शिक्षा आयोग की रिपोर्ट (1964-66)*. शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार.
- **Lickona, T.** (1991). *Educating for character: How our schools can teach respect and responsibility*. Bantam Books.
- **मिश्र, ए. के.** (2022). *शिक्षा: सामाजिक नियंत्रण और सामाजिक परिवर्तन का दोहरा इंजन*. भारतीय आधुनिक शिक्षा जर्नल, 15(2), 45-58.
- **Noddings, N.** (2013). *Education and democracy in the 21st century*. Teachers College Press.
- **पांडेय, आर. एन.** (2023). *राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020: चरित्र निर्माण के नए आयाम*. शोध प्रवाह, 28(1), 12-25.

GYAN MANTHAN
A MULTIDISCIPLINARY RESEARCH JOURNAL

- **Radhakrishnan, S.** (1948). *Report of the University Education Commission*. Ministry of Education, Government of India.
- **शर्मा, पी.** (2024). *प्राचीन भारतीय शिक्षण पद्धतियाँ: श्रवण, मनन और निदिध्यासन की प्रासंगिकता.* वैदिक शोध पत्रिका, 10(4), 102-115.
- **UNESCO.** (2015). *Rethinking education: Towards a global common good?*. UNESCO Publishing.

GYAN MANTHAN
A MULITIDISCIPLINARY RESEARCH JOURNAL